

अथर्ववेद

काण्ड ३

सूक्त २७

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Atharvaveda

Kaanda 3

Sukta 27

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

इस सूक्त में ध्यान लगाते समय मानसिक परिक्रमा करने के मन्त्र हैं। क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, नीचे व ऊपर ध्यान लगाते हुए हम यह देखते हैं कि ईश्वर न सिर्फ हर दिशा में विद्यमान है बल्कि हर दिशा से वह हमारी रक्षा कर रहा है और अनेक प्रकार के उपहार हमारे पोषण, सुख व समृद्धि के लिए हमारी ओर भेज रहा है।

प्रथम मन्त्र में पूर्व दिशा से ईश्वर के द्वारा भेजे गए उपहारों का उल्लेख है।

अथर्वा ऋषिः। प्राची, अग्निः, असितः, आदित्याः देवताः। ६० अक्षराणि। पञ्चपदा आर्ष्यतिशक्वरी छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

प्राची दिग्ग्निरधिपतिरसितो रक्षिताऽऽदित्या इषवः।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥

अथर्व ३:६:२७:१

प्राची'। दिक्। अग्निः। अधिपतिः। असितः। रक्षिता। आदित्याः। इषवः॥

तेभ्यः'। नमः'। अधिपतिभ्यः'। नमः'। रक्षितृभ्यः'। नमः'। इषुभ्यः'। नमः'। एभ्यः'। अस्तु॥

यः'। अस्मान्'। द्वेष्टि'। यम्'। वयम्'। द्विष्मः'। तम्'। वः'। जम्भे'। दध्मः'॥१॥

(प्राची) पूर्व (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (अग्निः) ओजमय ज्ञान रूप अग्नि है। (असितः) असीम व बन्धन रहित ईश्वर हमें मोह आदि के बन्धनों से मुक्त होने का मार्ग दिखाकर हमारी (रक्षिता) रक्षा कर रहा है और (आदित्याः) सूर्य की किरणों के (इषवः) बाण चला (द्वारा), हमारी रक्षा कर हमें प्रेरणा दे रहा है। (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है। (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं।

Synopsis

This composition contains the mantras for mental circumnavigation done during meditation. We sequentially focus our attention in the eastern, southern, western, northern, lower and upper directions and find that God is not only present in all of the directions, but he is also protecting us and sending us bounties of wealth for our nourishment, happiness and prosperity.

In the first mantra the sage describes the bounties provided by God from the eastern direction.

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** praachee, **agniḥ**, **asitaḥ**, **aadityaaḥ**, **vowels** 60, **chhandah** pañchapadaa (five limbed) aarṣhy atishakvaree, **svaraḥ** pañchamaḥ.

- 1. praachee digagniradhipatirasito rakṣhitaa''dityaa iṣhavaḥ,
tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣhitṛibhyo nama
iṣhubhyo nama ebhyo astu,
yo3smaan dveṣṭi yam vayan dviṣhmaṣtam vo jambhe dadhmaḥ.**

Atharva 3:6:27:1

praachee dik agniḥ adhi-patiḥ asitaḥ rakṣhitaa aadityaaḥ iṣhavaḥ,
tebhyah namaḥ adhipati-bhyah namaḥ rakṣhitṛi-bhyah namaḥ iṣhu-bhyah namaḥ ebhyah astu,
yah asmaan dveṣṭi yam vayan dviṣhmaḥ tam vah jambhe dadhmaḥ.

In the (*praachee*) eastern (*dik*) direction, (*agniḥ*) omniscient and radiant fire is the (*adhi*) governing (*patiḥ*) lord. That (*asitaḥ*) boundless lord is (*rakṣhitaa*) protecting us by showing us the ways to detach ourselves from the material world. The (*aadityaaḥ*) rays of Sun are the (*iṣhavaḥ*) arrows that protect and guide us. O God! We (*namaḥ*) bow to (*tebhyah*) all of your divine qualities. We (*namaḥ*) bow to God, the (*adhipatibhyah*) master of all. We (*namaḥ*) bow to God, who is also our (*rakṣhitṛibhyah*) protector. We (*namaḥ*) bow to the (*iṣhubhyah*) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (*ebhyah astu*) all of the above. (*yah*) Whosoever may have feelings of (*dveṣṭi*) jealousy and animosity towards (*asmaan*) us or (*yam*) those towards whom (*vayam*) we may reciprocate with similar feelings of (*dviṣhmaḥ*) animosity, we (*dadhmaḥ*) submit all of (*tam*) these entities and feelings to (*vah*) your (*jambhe*) jaw for justice.

दूसरे मन्त्र में दक्षिण दिशा से ईश्वर के द्वारा भेजे गए उपहारों का उल्लेख है।

अथर्वा ऋषिः । दक्षिणा, इन्द्रः, तिरश्चिराजीः, पितरः देवताः । ६३ अक्षराणि । पञ्चपदा निचृदार्ष्यष्टिच्छन्दः । मध्यमः स्वरः ।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२॥

अथर्व ३:६:२७:२

दक्षिणा । दिक् । इन्द्रः । अधिपतिः । तिरश्चिराजीः । रक्षिता । पितरः । इषवः ॥

तेभ्यः । नमः । अधिपतिभ्यः । नमः । रक्षितृभ्यः । नमः । इषुभ्यः । नमः । एभ्यः । अस्तु ॥

यः । अस्मान् । द्वेष्टि । यम् । वयम् । द्विष्मः । तम् । वः । जम्भे । दध्मः ॥२॥

(दक्षिणा) दक्षिण (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (इन्द्रः) ऐश्वर्यवान् इन्द्र है । वह हमें उत्तम मार्ग पर चलने का रास्ता दिखा (तिरश्चिराजीः) सीधा न चल पाने वाले कीट पतंगों आदि की निम्न योनियों में गिरने से हमारी (रक्षिता) रक्षा कर रहा है । (पितरः) ज्ञान, बल, धन व आयु से सम्पन्न शुभचिन्तक (इषवः) बाण के समान हमारे रक्षक और प्रेरणा स्रोत हैं । (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है । (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं ।

तीसरे मन्त्र में पश्चिम दिशा से ईश्वर के द्वारा भेजे गए उपहारों का उल्लेख है।

अथर्वा ऋषिः । प्रतीची, वरुणः, पृदाकूः, अन्नम् देवताः । ६० अक्षराणि । पञ्चपदा आर्ष्यतिशक्वरी छन्दः । पञ्चमः स्वरः ।

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिताऽन्नमिषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥३॥

अथर्व ३:६:२७:३

In the second mantra the sage describes the bounties provided by God from the southern direction.

riṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** dakṣiṇaa, indraḥ, tirashchiraajeeḥ, pitarah, **vowels** 63, **chhandah** pañchapadaa (five limbed) nichṛid aarṣhy aṣṭiḥ, **svarah** madhyamah.

**2. dakṣiṇaa digindro'dhipatistirashchiraajee rakṣhitaa pitara iṣhavaḥ,
tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣhitṛibhyo nama
iṣhubhyo nama ebhyo astu,
yo3smaan dveṣṭi yam vayan dviṣmastam vo jambhe dadhmaḥ.**

Atharva 3:6:27:2

dakṣiṇaa dik indraḥ adhi-patiḥ tirashchiraajeeḥ rakṣhitaa pitarah iṣhavaḥ,
tebhyah namaḥ adhipatibhyah namaḥ rakṣhitṛibhyah namaḥ iṣhubhyah namaḥ ebhyah astu,
yah asmaan dveṣṭi yam vayan dviṣmah tam vah jambhe dadhmaḥ.

In the (*dakṣiṇaa*) southern (*dik*) direction, the (*indraḥ*) possessor of righteous wealth, Indra is the (*adhi*) governing (*patiḥ*) lord. He, by showing us the righteous path, is (*rakṣhitaa*) protecting us from falling to the level of lowly creatures like (*tirashchiraajeeḥ*) insects who move in a zigzag fashion. Our well wishing (*pitarah*) elders who are blessed with knowledge, strength, wealth and age are the (*iṣhavaḥ*) arrows that protect and stimulate our intellect. O God! We (*namaḥ*) bow to (*tebhyah*) all of your divine qualities. We (*namaḥ*) bow to God, the (*adhipatibhyah*) master of all. We (*namaḥ*) bow to God, who is also our (*rakṣhitṛibhyah*) protector. We (*namaḥ*) bow to the (*iṣhubhyah*) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (*ebhyah astu*) all of the above. (*yah*) Whosoever may have feelings of (*dveṣṭi*) jealousy and animosity towards (*asmaan*) us or (*yam*) those towards whom (*vayan*) we may reciprocate with similar feelings of (*dviṣmah*) animosity, we (*dadhmaḥ*) submit all of (*tam*) these entities and feelings to (*vah*) your (*jambhe*) jaw for justice.

In the third mantra the sage describes the bounties provided by God from the western direction.

riṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** prateechee, varuṇah, pṛidaakooḥ, annam, **vowels** 60, **chhandah** pañchapadaa (five limbed) aarṣhy atishakvaree, **svarah** pañchamah.

**3. prateechee dig varuṇo'dhipatiḥ pṛidaakoo rakṣhitaa'nnam iṣhavaḥ,
tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣhitṛibhyo nama
iṣhubhyo nama ebhyo astu,
yo3smaan dveṣṭi yam vayan dviṣmastam vo jambhe dadhmaḥ.**

Atharva 3:6:27:3

प्रतीची'। दिक्। वरुणः। अधिपतिः। पृदाकुः। रक्षिता। अन्नम्। इषवः॥

तेभ्यः। नमः। अधिपतिभ्यः। नमः। रक्षितृभ्यः। नमः। इषुभ्यः। नमः। एभ्यः। अस्तु॥

यः। अस्मान्। द्वेष्टि। यम्। वयम्। द्विष्मः। तम्। वः। जम्भे। दध्मः॥३॥

(प्रतीची) पश्चिम (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (वरुणः) जलों के देव वरुण है। वह हममें (पृदाकुः) साँप बिच्छुओं जैसी विषैली पशुवत प्रवृत्तिओं का शमन कर हमारी (रक्षिता) रक्षा करता है। (अन्नम्) अन्न के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है। (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है। (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं।

चौथे मन्त्र में उत्तर दिशा से ईश्वर के द्वारा भेजे गए उपहारों का उल्लेख है।

अथर्वा ऋषिः। उदीची, सोमः, स्वजः, अशनिः देवताः। ५९ अक्षराणि। पञ्चपदा निचृदार्ष्यतिशक्वरी छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

उदीची' दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।

यो३' अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥४॥

अथर्व ३:६:२७:४

उदीची। दिक्। सोमः। अधिपतिः। स्वजः। रक्षिता। अशनिः। इषवः॥

तेभ्यः। नमः। अधिपतिभ्यः। नमः। रक्षितृभ्यः। नमः। इषुभ्यः। नमः। एभ्यः। अस्तु॥

यः। अस्मान्। द्वेष्टि। यम्। वयम्। द्विष्मः। तम्। वः। जम्भे। दध्मः॥४॥

(उदीची) उत्तर (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (सोमः) शान्तिदायक प्रकाश है। (स्वजः) स्वयं उत्पन्न हुआ यह हमारी (रक्षिता) रक्षा करता है। (अशनिः) ओजमयी विद्युत (औरोरा बोरेलिस) के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है। (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए

prateechee dik varuṇaḥ adhipatiḥ pṛidaakuḥ rakṣhita-annam iṣhavaḥ,
tebhyaḥ namaḥ adhipatibhyaḥ namaḥ rakṣhitṛi-bhyaḥ namaḥ iṣhubhyaḥ namaḥ ebhyaḥ astu,
yaḥ asmaan dveṣṭi yam vayan dviṣmaḥ tam vaḥ jambhe dadhmaḥ.

In the (prateechee) western (dik) direction, the (varuṇaḥ) sustainer of waters, Varuṇa is the (adhi) governing (patiḥ) lord. He (rakṣhita) protects us by telling us to curb our poisonous animal tendencies like those of (pṛidaakuḥ) scorpions, snakes etc. (annam) Grains are the (iṣhavaḥ) arrows that protect and nourish us. O God! We (namaḥ) bow to (tebhyaḥ) all of your divine qualities. We (namaḥ) bow to God, the (adhipatibhyaḥ) master of all. We (namaḥ) bow to God, who is also our (rakṣhitṛibhyaḥ) protector. We (namaḥ) bow to the (iṣhubhyaḥ) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ebhyaḥ astu) all of the above. (yaḥ) Whosoever may have feelings of (dveṣṭi) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayan) we may reciprocate with similar feelings of (dviṣmaḥ) animosity, we (dadhmaḥ) submit all of (tam) these entities and feelings to (vaḥ) your (jambhe) jaw for justice.

In the fourth mantra the sage describes the bounties provided by God from the northern direction.

ṛiṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** udeechee, somaḥ, svajaḥ, ashaniḥ, **vowels** 59, **chhandah** pañchapadaa (five limbed) nichṛid aarṣhy atishakvaree, **svarah** pañchamaḥ.

**4. udeechee dik somo'dhipatiḥ svajo rakṣhitaashaniriṣhavaḥ,
tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣhitṛibhyo nama
iṣhubhyo nama ebhyo astu,
yo3smaan dveṣṭi yam vayan dviṣmastam vo jambhe dadhmaḥ.**

Atharva 3:6:27:4

udeechee dik somaḥ adhi-patiḥ svajaḥ rakṣhitaashaniḥ iṣhavaḥ,
tebhyaḥ namaḥ adhipatibhyaḥ namaḥ rakṣhitṛi-bhyaḥ namaḥ iṣhubhyaḥ namaḥ ebhyaḥ astu,
yaḥ asmaan dveṣṭi yam vayan dviṣmaḥ tam vaḥ jambhe dadhmaḥ.

In the (udeechee) northern (dik) direction the (somaḥ) calming lights like Aurora Borealis are the (adhi) governing (patiḥ) lord. (svajaḥ) Created by their own nature these lights (rakṣhitaashaniḥ) protect us. Radiant (ashaniḥ) electric impulses are the (iṣhavaḥ) arrows that protect us. O God! We (namaḥ) bow to (tebhyaḥ) all of your divine qualities. We (namaḥ) bow to God, the (adhipatibhyaḥ) master of all. We (namaḥ) bow to God, who is also our (rakṣhitṛibhyaḥ) protector. We (namaḥ) bow to the (iṣhubhyaḥ) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ebhyaḥ astu) all of the above. (yaḥ) Whosoever may have feelings of (dveṣṭi) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayan) we may reciprocate with similar feelings of (dviṣmaḥ) animosity, we (dadhmaḥ) submit all of (tam) these entities

हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है। (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं।

पाँचवे मन्त्र में निचली दिशा से ईश्वर के द्वारा भेजे गए उपहारों का उल्लेख है।
अथर्वा ऋषिः। ध्रुवा, विष्णुः, कल्माषग्रीवः, वीरुधः देवताः। ६३ अक्षराणि। ककुम्मतिगर्भा पञ्चपदा निचृदार्ष्यष्टिच्छन्दः। मध्यमः स्वरः।

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५॥

अथर्व ३:६:२७:५

ध्रुवा। दिक्। विष्णुः। अधिपतिः। कल्माषग्रीवः। रक्षिता। वीरुधः। इषवः॥
तेभ्यः। नमः। अधिपतिभ्यः। नमः। रक्षितृभ्यः। नमः। इषुभ्यः। नमः। एभ्यः। अस्तु॥
यः। अस्मान्। द्वेष्टि। यम्। वयम्। द्विष्मः। तम्। वः। जम्भे। दध्मः॥५॥

(ध्रुवा) नीचे की (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (विष्णुः) सर्वव्यापक ईश्वर है। (कल्माष) पाप व बुराईयों को (ग्रीवः) निगल कर वह हमारी (रक्षिता) रक्षा करता है। (वीरुधः) पेड़ पौधे के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है। (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है। (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं।

and feelings to (*vaḥ*) your (*jambhe*) jaw for justice.

In the fifth mantra the sage mantra describes the bounties provided by God from the lower direction.

riṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** dhruvaa, viṣṇuḥ, kalmaasha-greevaḥ, veerudhaḥ, **vowels** 63, **chhandah** kakummatigarbhā pañchapadaa (five limbed) nichṛid aarṣhy aṣṭiḥ, **svarah** madhyamaḥ.

**5. dhruvaa digviṣṇuradhipatiḥ kalmaashagreevo rakshitaa veerudha
ishavaḥ,
tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakshitribhyo nama
ishubhyo nama ebhyo astu,
yo3smaan dveṣṭi yam vayan dviṣmaḥ tam vaḥ jambhe dadhmaḥ.**

Atharva 3:6:27:5

dhruvaa dik viṣṇuḥ adhi-patiḥ kalmaasha-greevaḥ rakshitaa veerudhaḥ ishavaḥ,
tebhyaḥ namaḥ adhipatibhyaḥ namaḥ rakshitribhyaḥ namaḥ ishubhyaḥ namaḥ ebhyaḥ astu,
yaḥ asmaan dveṣṭi yam vayan dviṣmaḥ tam vaḥ jambhe dadhmaḥ.

In the (*dhruvaa*) lower (*dik*) direction the (*viṣṇuḥ*) all pervading God is the (*adhi*) governing (*patiḥ*) lord. He (*rakshitaa*) protects us by (*greevaḥ*) swallowing (removing) our (*kalmaasha*) tendencies to commit sins. The (*veerudhaḥ*) plants, herbs and trees are the (*ishavaḥ*) arrows that protect and nourish us. O God! We (*namaḥ*) bow to (*tebhyaḥ*) all of your divine qualities. We (*namaḥ*) bow to God, the (*adhipatibhyaḥ*) master of all. We (*namaḥ*) bow to God, who is also our (*rakshitribhyaḥ*) protector. We (*namaḥ*) bow to the (*ishubhyaḥ*) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (*ebhyaḥ astu*) all of the above. (*yaḥ*) Whosoever may have feelings of (*dveṣṭi*) jealousy and animosity towards (*asmaan*) us or (*yam*) those towards whom (*vayam*) we may reciprocate with similar feelings of (*dviṣmaḥ*) animosity, we (*dadhmaḥ*) submit all of (*tam*) these entities and feelings to (*vaḥ*) your (*jambhe*) jaw for justice.

छठे मन्त्र में ऊपरी दिशा से ईश्वर के द्वारा भेजे गए उपहारों का उल्लेख है।

अथर्वा ऋषिः । ऊर्ध्वा, बृहस्पतिः, श्वित्रः, वर्षम् देवताः । ६१ अक्षराणि । पञ्चपदा भुरिगार्घ्यतिशक्वरी
छन्दः । पञ्चमः स्वरः ।

ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

यो३ः अस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥

अथर्व ३:६:२७:६

ऊर्ध्वा । दिक् । बृहस्पतिः । अधिपतिः । श्वित्रः । रक्षिता । वर्षम् । इषवः ॥

तेभ्यः । नमः । अधिपतिभ्यः । नमः । रक्षितृभ्यः । नमः । इषुभ्यः । नमः । एभ्यः । अस्तु ॥

यः । अस्मान् । द्वेष्टि । यम् । वयम् । द्विष्मः । तम् । वः । जम्भे । दध्मः ॥६॥

(ऊर्ध्वा) ऊपर की (दिक्) दिशा का (अधिपतिः) स्वामी (बृहस्पतिः) विस्तृत ज्ञान वाला ईश्वर है । वह (श्वित्रः) शुद्ध स्वरूप हमारी (रक्षिता) रक्षा करने वाला है और (वर्षम्) वर्षा के (इषवः) बाणों द्वारा हमारी रक्षा करता है और प्रेरणा देता है । (तेभ्यः) उन सब दिव्य गुणों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (अधिपतिभ्यः) अधिपतियों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (रक्षितृभ्यः) रक्षा करने वालों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (इषुभ्यः) रक्षा के साधनों के लिए हमारा (नमः) नमस्कार है, (एभ्यः) इन सबके लिए पुनः हमारा नमस्कार (अस्तु) है । (यः) जो (अस्मान्) हमारे साथ (द्वेष्टि) द्वेष करता है और (यम्) जिससे (वयम्) हम बदले में (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तम्) उस द्वेष भावना को हम (वः) आपके (जम्भे) जबड़े (न्याय व्यवस्था) के (दध्मः) सपुर्द करते हैं ।

In the sixth mantra the sage describes the bounties provided by God from the upper direction.

riṣhiḥ atharvaa, **devataaḥ** oordhvaa, **bṛihaspatiḥ**, **shvitraḥ**, **varṣham**, **vowels** 61, **chhandaḥ** pañchapadaa (five limbed) **bhurig** aarṣhy atishakvaree, **svaraḥ** pañchamaḥ.

**6. oordhvaa digbṛihaspatiradhipatiḥ shvitro rakṣhitaa varṣhamiṣhavaḥ,
tebhyo namo'dhipatibhyo namo rakṣhitṛibhyo nama
iṣhubhyo nama ebhyo astu,
yo3smaan dveṣṭi yam vayan dviṣhmaḥ tam vaḥ jambhe dadhmaḥ.**

Atharva 3:6:27:6

oordhvaa dik bṛihaspatiḥ adhipatiḥ shvitraḥ rakṣhitaa varṣham iṣhavaḥ,
tebhyaḥ namaḥ adhipatibhyaḥ namaḥ rakṣhitṛi-bhyaḥ namaḥ iṣhubhyaḥ namaḥ ebhyaḥ astu,
yaḥ asmaan dveṣṭi yam vayan dviṣhmaḥ tam vaḥ jambhe dadhmaḥ.

In the (oordhvaa) upper (dik) direction the (bṛihaspatiḥ) possessor of the elaborate knowledge is the (adhi) governing (patiḥ) lord. He (rakṣhitaa) protects us with his (shvitraḥ) purity. The (varṣham) rain drops are the (iṣhavaḥ) arrows that protect and nourish us. O God! We (namaḥ) bow to (tebhyaḥ) all of your divine qualities. We (namaḥ) bow to God, the (adhipatibhyaḥ) master of all. We (namaḥ) bow to God, who is also our (rakṣhitṛibhyaḥ) protector. We (namaḥ) bow to the (iṣhubhyaḥ) means of protection that are being used by God in order to protect us. We again bow to (ebhyaḥ astu) all of the above. (yaḥ) Whosoever may have feelings of (dveṣṭi) jealousy and animosity towards (asmaan) us or (yam) those towards whom (vayan) we may reciprocate with similar feelings of (dviṣhmaḥ) animosity, we (dadhmaḥ) submit all of (tam) these entities and feelings to (vaḥ) your (jambhe) jaw for justice.